तर्पण प्रयोग विधि

तर्पण के योग्य पात्र : सोना, चाँदी, ताम्बा, काँसा का पात्र पितृओं के तर्पण में शुभ माना गया है। मिट्टी तथा लोहे का पात्र सर्वथा वर्जित है।

- **घर में, ग्रहण, पितृश्राद्ध, व्यतिपातयोग, अमावस्या तथा संक्रांति के दिन निषेध होने पर भी तिल से तर्पण करें।**
- कुशा के अग्र भाग से देवताओं का, मध्य से मनुष्यों का, मूल तथा अग्र भाग से पितृओं तर्पण करें।

गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिका के मध्य पोर में दो कुशों और बायीं अनामिका में तीन कुशों कि पवित्री धारण करें। फिर हाथ में त्रिकुश, यव, अक्षत, और जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़ें-

संकल्प **: मै आज ....(माता का नाम) नामक माता तथा.....(पिता का नाम) नामक पिता का .... (स्वयं का नाम) नामक पुत्र अपने समस्त कुल गोत्र के पितृओं की प्रसन्नता एवं आशीर्वाद प्राप्ति हेतु तथा धर्म अर्थ काम मोक्ष रूपी पुरूषार्थ की प्राप्ति हेतु अपने घर में देवर्षि मनुष्य पितृ तर्पण करने का संकल्प करता हुं।**

आवाहन: इसके बाद ताम्बे के पात्र में जल और चावल डालकर त्रिकुश को पूर्वाग्र रखकर उस पात्र को दायें हाथ में लेकर बायें हाथ से ढककर निचे लिखे मन्त्र पढ़कर देव-ऋषियों का आवाहन करें।

ब्रह्मादयः सुरः सर्वे ऋषयः सनकादयः।

आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्ड उदरवर्तिनः।।

१. देव तर्पण विधि: देव तथा ऋषि तर्पण में पूर्व कि तरफ मुँह करें। यज्ञोपवीत (जनेऊ) को सव्य रखें। दाहिना घुटना भूमि पर लगा के बैठें। अर्घ्य पात्र में चावल छोड़ें। तीनो कुशों को पूर्वकी ओर अग्रभाग कर रखें। जल कि अञ्जलि एक-एक हो। देवतीर्थ से अर्थात दायें हाथ कि अँगुलियों के अग्रभाग से दें। जलांजलि को सोने,चांदी, ताम्बे अथवा काँसे के पात्र में डालें। यदि नदी में तर्पण किया जाये तो दोनों हाथों को मिलाकर जल भरकर गौ के सींघ जितना ऊँचा उठाकर जल में ही अञ्जलि डालें।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद **तृप्यताम्** कहकर एक-एक अञ्जलि जल देते जाएँ।

ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्।

ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्।

ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

२. **ऋषि तर्पण विधि:** इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रवाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि जल दें।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

३. **दिव्य मनुष्य तर्पण विधि:** उत्तर दिशा की ओर मुँह करें। यज्ञोपवीत (जनेऊ) व् गमछे को माला (कंठी) की भाँति गले में धारण करें। सीधा बैठें। कोई घुटना भूमि पर न लगाएं। अर्घ्यपात्र में जौ छोड़ें। तीनो कुशों को उत्तराग्र रखें। प्रजापत्य (काय) तीर्थ से अर्थात कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूल भाग में रखकर यही से निम्नाङ्कित मन्त्रों को दो-दो बार जल दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम् -2 ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् – 2 ॐ सनातनस्तृप्यताम् -2 ॐ कपिलस्तृप्यताम् -2 ॐ आसुरिस्तृप्यताम् -2 ॐ वोढुस्तृप्यताम् -2 ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् -2

४. **दिव्य पितृ तर्पण विधि:** दक्षिण की ओर मुँह करे। अपसव्य हो जाएँ अर्थात यज्ञोपवीत (जनेऊ) को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के निचे ले जायें। गमछे को दाहिने कंधे पर रखें। बायें घुटने को भूमि पर लगाकर बैठें। अर्घ्य पात्र में काले तिल छोड़ें। कुशों को बीच से मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ में अंगूठे और तर्जनी के बीच में रखे। पितृतीर्थ से अर्थात अंगुठा और तर्जनी के मध्यभाग से दिव्य पितरों के लिये निम्नाङ्कित मन्त्र-वाक्यों को पढते हुए तीन-तीन अञ्जलि जल दें। (यदि तिल हो तो "सतिलं जलं" और यदि सिर्फ गंगाजल हो तो "गंगाजलं बोलें)

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा – 3

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा – 3

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा – 3

ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा – 3

ॐ अग्निष्वात्ता: पितरस्तृप्यन्ताम् इदं गङ्गाजलं तेभ्य: स्वधा – 3

ॐ सोमपा: पितरस्तृप्यन्ताम् इदं गङ्गाजलं तेभ्य: स्वधा – 3

ॐ बर्हिषद: पितरस्तृप्यन्ताम् इदं गङ्गाजलं तेभ्य: स्वधा – 3

५. **यम तर्पण विधि:** इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रो को पढते हुए चौदह यमों के लिये भी पितृतीर्थ से ही तीन-तीन अञ्जलि तिल सहित जल दें।

ॐ यमाय नम: – 3 ॐ धर्मराजाय नम: – 3 ॐ मृत्यवे नम: – 3 ॐ अन्तकाय नम: – 3 ॐ वैवस्वताय नमः – 3 ॐ कालाय नम: – 3

ॐ सर्वभूतक्षयाय नम: – 3 ॐ औदुम्बराय नम: – 3 ॐ दध्नाय नम: – 3 ॐ नीलाय नम: – 3 ॐ परमेष्ठिने नम: – 3 ॐ वृकोदराय नम: – 3

ॐ चित्राय नम: – 3 ॐ चित्रगुप्ताय नम: – 3

६. **मनुष्यपितृ तर्पण विधि:** तर्पण के पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्र से आवाहन करें-

मेरे समस्त पितृ गण आये और जलांजलि ग्रहण करे

तदनन्तर अपने पितृगणों का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिये पूर्वोक्त विधि से ही तीन-तीन अञ्जलि तिल-सहित (यदि तिल हो तो "सतिलं जलं" और यदि सिर्फ गंगाजल हो तो " गंगाजलं **(गंगाजलम्)** बोलें) जल इस प्रकार दें—

पिता पक्ष के लिए:

पिता के लिए: **मम पिता तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

पिता के भाई के लिए: **मम पितृव्याः तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

दादा के लिए: **मम पितामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

परदादा के लिए: **मम प्रपितामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

वृद्ध परदादा के लिए: **मम वृद्ध प्रपितामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

माता के लिए: **मम माता तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

दादी के लिए: **मम पितामही तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

परदादी के लिए: **मम प्रपितामही तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

सौतेली माँ के लिए: **मम सापत्नमाता तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

ननिहाल पक्ष के लिए: इसी प्रकार से द्वितीय गोत्र (ननिहाल पक्ष) के लिए मातामह (नाना), मातामही (नानी) आदि का तर्पण करें। पहले कि भांति तीन-तीन बार पढ़कर जलांजलि पितृतीर्थ से दें।

नाना के लिए: **मम मातामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

परनाना के लिए: **मम प्रमातामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

वृद्ध परनाना के लिए: **मम वृद्ध प्रमातामह: तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (3)**

नानी के लिए: **मम मातामही तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

परनानी के लिए: **मम प्रमातामही तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

वृद्ध परनानी के लिए: **मम वृद्ध प्रमातामही तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (3)**

पत्नी आदि अन्य सम्बन्धी के लिए: इसी प्रकार से इसके आगे पत्नी से लेकर अन्य आप्तपर्यंत जो भी सम्बन्धी हो उसके लिए गोत्र और नाम बोलकर एक-एक अञ्जलि जल दें।

1. पत्नी के लिए: **मम भार्या तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (1)**
2. पुत्र के लिए: **मम पुत्रः तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (1)**
3. पुत्री के लिए: **मम पुत्री तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (1)**
4. भाई के लिए: **मम भ्राता तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (1)**
5. बुआ के लिए: **मम पितृष्वसा तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (1)**
6. मौसी के लिए: **मम मातृष्वसा तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्यै स्वधा (1)**

7. **श्वशुर के लिए: मम श्वशुरः तृप्यताम् इदं गङ्गाजलं तस्मै स्वधा (1)**

इसके बाद यज्ञोपवीत (जनेऊ) को सव्य रखें। **दाहिना घुटना भूमि पर लगा के बैठें। पूर्वाभिमुख हो** नीचे लिखे श्लोकों को पढते हुए जल गिरावे—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसा: । पिशाचा गुह्यका: सिद्धा: कूष्माण्डास्तरव: खगा: ॥

जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तव: । तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिला: ॥

इसके बाद अपसव्य हो जाएँ अर्थात यज्ञोपवीत (जनेऊ) को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के निचे ले जायें। गमछे को दाहिने कंधे पर रखें। बायें घुटने को भूमि पर लगाकर बैठें। दक्षिण मुख होकर नीचे लिखे श्लोकों को पढते हुए जल गिरावे—

नरकेषु समस्तेपु यातनासु च ये स्थिता: । तेषामाप्ययनायैतद्दीयते सलिलं मया ॥

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवा: । ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चसमत्तोऽभिवांच्छित ॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जितः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु॥

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवा: । तृप्यन्तु पितर: सर्वे मातृमातामहादय: ॥

अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

अर्थ: 'देवता, असुर , यक्ष, नाग, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, गुह्मक, सिद्ध, कूष्माण्ड, वृक्षवर्ग, पक्षी, जलचर जीव और वायु के आधार पर रहनेवाले जन्तु-ये सभी मेरे दिये हुए जल से भीघ्र तृप्त हों । जो समस्त नरकों तथा वहाँ की यातनाओं में पडेपडे दुरूख भोग रहे हैं, उनको पुष्ट तथा शान्त करने की इच्छा से मैं यह जल देता हूँ । जो मेरे बान्धव न रहे हों, जो इस जन्म में बान्धव रहे हों, अथवा किसी दूसरे जन्म में मेरे बान्धव रहे हों, वे सब तथा इनके अतिरिक्त भी जो मुम्कसे जल पाने की इच्छा रखते हों, वे भी मेरे दिये हुए जल से तृप्त हों ।' 'ब्रह्माजी से लेकर कीटों तक जितने जीव हैं, वे तथा देवता, ऋषि, पितर, मनुष्य और माता, नाना आदि पितृगण-ये सभी तृप्त हों मेरे कुल की बीती हुई करोडों पीढियों में उत्पन्न हुए जो-जो पितर ब्रह्मलोकपर्यम्त सात द्वीपों के भीतर कहीं भी निवास करते हों, उनकी तृप्ति के लिये मेरा दिया हुआ यह तिलमिश्रित जल उन्हें प्राप्त हो जो मेरे बान्धव न रहे हों, जो इस जन्म में या किसी दूसरे जन्म में मेरे बान्धव रहे हों, वे सभी मेरे दिये हुए जल से तृप्त हो जायँ ।

वस्त्र-निष्पीडन: सब पितृ गणों का तर्पण हो जाने के बाद अँगोछे (वस्त्र)को चार आवृत्ति (तह) लपेटकर उसमे जल तथा तिल छोड़कर निचे लिखे मन्त्र पढ़कर बाईं ओर पृथ्वी पर निचोड़ें:

"ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृता: । ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् "

(यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध आदि कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीडन नहीं करना चाहिये।)

भीष्म तर्पण: इसके बाद दक्षिणाभिमुख हो पितृतर्पण के समान ही अनेऊ अपसव्य करके हाथ में कुश धारण किये हुए ही पितृतीर्थ से तिलमिश्रित जल के द्वारा तर्पण करे । उनके लिये तर्पण का मन्त्र निम्नाङ्कित श्लोक है–

"भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:।

आभीरभ्दिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। "

सूर्य को अर्घ्य दान: शुद्ध जल से आचमन करके प्राणायाम करे। तदनन्तर यज्ञोपवीत सव्य कर एक पात्र में शुद्ध जल भरकर उसमे चन्दन पुष्प आदि लेकर निम्न दिए मन्त्रों द्वारा अर्ध्य अर्पण करे।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

इसके बाद निचे बैठ कर निचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ औषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

समर्पण: निम्न अंकित श्लोक पढ़कर समस्त तर्पण कर्म भगवान् को समर्पित करें।

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम।

इसके पश्चात् हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करते हुए पाठ करें।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे |

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यदभवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

Whatsapp For Any Problem

Mobile No. : 9420904646

https://shivji.in/